पढ़ो पंजाब पढ़ाओ पंजाब हिंदी टीम
पाठ्यक्रम 2021-22

प्रथम चरण मई 2021

कक्षा -ग्यारहवीं - अनुच्छेद लेखन

सब दिन न होत एक समान

समय परिवर्तनशील है। यह कभी भी स्थिर नहीं रहता। इसका पहिया सदैव घूमता रहता है। समय के अनुसार ही मनुष्य के सुख -दु:ख का क्रम चलता है। कल तक यदि कोई राजा था, तो आज वह दाने दाने को मोहताज हो सकता है। यदि कोई कल तक रंक था, आज वह सेठ साहूकार है, धनवान है। जो कभी रोता रहता था, समय के फेर से आज वह मुस्करा रहा है। जो कभी हँसता रहता था, आज आँसू बहा रहा है। जो कल तक आराम से ऐश्वर्य का जीवन जी रहा था, आज वह कड़ा संघर्ष कर रहा है। उधर संघर्ष करने वाला चैन की नींद सो रहा है। कब कोई उँचाइयों को छू जाता है, कब कोई पतन के गर्त में गिर जाता हैं, कुछ भी कहा नहीं जा सकता । दिन के बाद रात और रात के बाद सुबह अवश्य आती है। इसी प्रकार दिनों के बदलते भी देर नहीं लगती। हम कल तक क्या थे, कैसा हमारा समाज था, न यातायात के साधन थे, न ही बढ़ती हुई जनसंख्या की चिंता या इससे उत्पन्न न कोई अन्य समस्या। न विज्ञान की अंधी दौड़ थी, न आपसी रिश्तों में दरार थी। किंतु आज सब विपरीत है। सुख के साथ दु:ख, दु:ख के साथ सुख बंधा ही है। मनुष्य को जब यह समझ आ जाती है, तब वह सच्चा सुख प्राप्त कर लेता है। अत: सब दिन न होत एक समान।

तेते पाँव पसारिए, जेती लंबी सौर

मानव शरीर इच्छाओं का घर है। इच्छाएँ हरपल जन्म लेती रहती हैं। अपनी इन इच्छाओं को पूरा करने के लिए मनुष्य कई बार अपनी आय के साधनों को भी नहीं देख पाता। उसकी आय कम होती है और व्यय अधिक। कहने का अभिप्राय है कि उसका व्यय (खर्च) आय से अधिक हो जाता है। अपनी झूठी शान दिखाने के लिए अपनी मान-मर्यादा की खातिर वह कई बार ऋण लेने से भी नहीं चूकता। ऋणी हो जाने पर वह कई मुसीबतों को भी गले लगा लेता है। उसका शरीर रोगों का घर बन जाता है। वह अपना भावी जीवन अंधकार में डुबो लेता है। उसे सुख कम दु:ख अधिक मिलने लग जाते हैं, अर्थात सुख के स्थान पर उसे दु:ख घेर लेते हैं। यदि वह अपने व्यय को कम करके अपनी आय को देखे, उसी के अनुरूप खर्च करे, अपनी चादर की लंबाई देखकर पैर पसारे तो शायद उसके दु:ख भी सुख में परिवर्तित हो जाएँगे। तब उसे न तो अपमानित जीवन जीना पड़ता है और न ही दूसरों के व्यंग्य-बाण सहने पड़ते हैं। जीवन में सच्चा सुख भी ऐसा व्यक्ति ही प्राप्त करता है, जो अपने साधनों की सीमा देखता हो। जो दूसरों को देखकर अपना महल गिराते हैं, अपना घर फूँकते हैं, वे समाज में तमाशबीन कहलाते हैं। जो व्यक्ति अपने घर में रूखी सूखी खाता है, बाह्य आडम्बरों से बचता है, वही वास्तविक रूप से आनंद को प्राप्त करता है। अत: मनुष्य को अपनी आय के अनुसार ही व्यय करना चाहिए।

मन के हारे-हार है, मन के जीते जग जीत

हारजीत, आशा निराशा, सुख दु:ख सब मन पर आधारित हैं। यह व्यक्ति की इच्छा पर ही निर्भर करता है कि वह हार को गले लगाए या फिर जीत को। यदि मन की इच्छा शक्ति दृढ़ है तो बड़े बड़े पहाड़ भी उसके आगे संकट उपस्थित नहीं कर सकते। यदि मन की इच्छा शक्ति दृढ़ नहीं है तो छोटे से छोटा सांसारिक आकर्षण या बाधा उसे विचलित कर सकते हैं। मन तरकश के समान है, जो सभी बाणों को एक जुट रखता है। मन चंचल है तो व्यक्ति अवनति की ओर जाता है और यदि मन स्थिर है तो व्यक्ति उन् नति की ओर अग्रसर होता है।

मन ही मनुष्य का मित्र है, यही मनुष्य का शत्रु है। मन ही कुमार्ग या सन्मार्ग पर ले जाता है। अत: मन को विजयी करना ही हमारी उन्नति का मूलाधार है। गुरु नानक देव जी ने ठीक ही कहा है कि मन जीते जग जीत अर्थात् मन को जीतने वाला संसार पर जीत हासिल कर लेता है। भगवान राम भी मन की दृढ़ इच्छा शक्ति से ही रावण जैसे अजेय शत्रु को जीत पाए थे। मन एक दर्पण है, जो कि मनुष्य के भले -बुरे सारे कर्म को दर्शाता है। स्वच्छ मन हमारे विचारों को भी स्वच्छ ओर पवित्र बनाता है, जब कि मन की इच्छा शक्ति कमज़ोर होने पर मनुष्य दुर्बलताओं के गड्ढे में गिर जाता है। अत: यह ठीक ही कहा गया है कि मन की हार से ही मनुष्य की हार है और उसके मन की जीत से जीत।

सच्चा मित्र

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज में रह कर उसे अन्य लोगों से मेल या संपर्क करना होता है। घर से बाहर निकलते ही उसे किसी मित्र या साथी की आवश्यकता पड़ती है। मित्र ही व्यक्ति के सुख दु:ख में सहायक होता है। जिससे वह अपने सुख-दु:ख की बात कर सके। पर किसी को मित्र बनाने से पहले मित्रता की परख कर लेनी चाहिए। जिस प्रकार व्यक्ति घोड़े को खरीदते समय उसकी अच्छी प्रकार जाँच पड़ताल करता है, उसी प्रकार मित्र को भी जाँच परख लेना चाहिए। सच्चा मित्र वही होता है, जो किसी भी प्रकार की विपत्ति में हमारे काम आता है या हमारी सहायता करता है। सच्चा मित्र हमें बुराई के रास्ते पर जाने से रोकता है। तथा सन्मार्ग की ओर ले जाता है। वह हमारी अमीरी गरीबी को नहीं देखता, जात पात को महत्ता नहीं देता, मात्र मनुष्य की मित्रता देखता है, लोलुप नहीं होता। वह निःस्वार्थ भाव से मित्र की सहायता करता है। सच्चे मित्र को औषधि, वैद्य या खज़ाना कहा गया है। क्योंकि वह औषधि की तरह हमारे विचारों को शुद्ध बनाता है, वैद्य की तरह हमारा इलाज करता है, खज़ाने की तरह हमारी मुसीबत में सहायता करता है। सच्चा मित्र शुद्ध हृदय से सम्पन्न, मुदुल स्वभाव वाला, शिष्ट, दृढ़ संकल्प तथा विश्वास के योग्य होता है। जिस व्यक्ति को सच्चा मित्र मिल जाता है, वह साक्षात ईश्वर को प्राप्त कर लेता है। आज के जीवन में सच्चा मित्र प्राप्त करना बहुत कठिन है। स्वार्थी मित्र ही अधिक मिलते हैं। ऐसे स्वार्थी मित्रों से मनुष्य को सावधान रहना चाहिए। सच्चा मित्र जीवन भर मित्रता के पवित्र संबंध को निभाता है -कृष्ण और सुदामा की तरह ।

तैयारकर्ता-
डॉ.हरिभजनप्रियदर्शी (प्रवक्ता- हिंदी)
राजकीय(कन्या) वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय मलोट।
श्री मुक्तसर साहिब